National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2016; 1(8): 79-81
© 2016 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ सुरेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत),
भगवान परशुराम महाविद्यालय,
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

Correspondence:
डॉ सुरेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत),
भगवान परशुराम महाविद्यालय,
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

रामायण में जीवन-दर्शन

डॉ सुरेश कुमार

भारतीय संस्कृति के दो महान महाकाव्य – महाभारत और रामायण – केवल ऐतिहासिक आख्यान नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन, नैतिकता, धर्म और मानव-मूल्यों के शाश्वत स्रोत हैं। इनमें से रामायण को "आदिकाव्य का रूप" कहा जाता है[1], क्योंकि संस्कृत साहित्य की यह प्रथम महाकाव्यात्मक रचना है। ऋषि वाल्मीकि को आदिकवि कहा जाता है और उनकी काव्य-रचना में जो रस, नैतिकता और कर्तव्य-निर्देश मिलता है, वह भारतीय मानस को आज भी प्रेरित करता है।

रामायण को हम केवल एक धार्मिक ग्रंथ के रूप में नहीं देख सकते। यह मानव-जीवन के प्रत्येक पहलू पारिवारिक सम्बन्ध, राजनीतिक व्यवस्था, सामाजिक मूल्य, नारी का स्थान, भक्ति, धर्म-अधर्म का संघर्ष और मनोवैज्ञानिक शिक्षा का विस्तृत दर्पण है। रामायण के विभिन्न प्रसंगों और पात्रों के माध्यम से जीवन-दर्शन की उन शिक्षाओं को उद्घाटित करना जो आज भी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र-निर्माण में प्रासंगिक हैं।

राजधर्ममनुप्राप्य नात्यर्थं परिकल्पयेत्।
नात्यर्थं मानसं कार्यं नात्यर्थं वित्तमाचरेत्॥[2]

रामायण का मूल आधार धर्म है। धर्म यहाँ केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि मानव का कर्तव्य और समाज के प्रति जिम्मेदारी के रूप वर्णन करते हुए कहा गया "रामो विग्रहवान धर्मः[3]" राम धर्म का साक्षात विग्रह है अर्थात् धर्म का वास्तविक स्वरूप है।

राम के चरित्र में हमें धर्म का मूर्त स्वरूप मिलता है — वे आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श भ्राता और आदर्श राजा हैं।

पितुर्वचननिर्देशात् कैकेय्याः प्रियकारणात्।
वनं गच्छाम्यहं रामो न मे धर्मोऽन्यथाग्रहः॥[4]

रामायण में पात्रों का आचरण हमें यह सिखाता है कि धर्म केवल शास्त्रों में पढ़ी जाने वाली वस्तु नहीं, बल्कि जीवन के हर निर्णय में निभाई जाने वाली जिम्मेदारी है।

वाल्मीकि रामायण में धर्म तीन स्तरों पर प्रकट होता है :

1. व्यक्तिगत धर्म – जैसे पुत्र का धर्म, पति का धर्म, भ्राता का धर्म।
2. सामाजिक धर्म – जैसे राजा का धर्म, प्रजा का धर्म।
3. आध्यात्मिक धर्म – ईश्वर-भक्ति, आत्मसंयम, साधना।

तुलसीदास जी ने भी यही भाव स्पष्ट करते हुए वर्णन किया है कि :

"धर्म हेतु अवतरेउ प्रभु, तजहुँ सकल भय माया।
जो जेहि रीतिनि नचहि उबरहि, सो तेहि रीतिनि उपाया [5]॥"

रामायण में कर्तव्य को सर्वोच्च महत्व दिया गया है। हर पात्र अपने-अपने व्यक्तिगत धर्म से बंधा हुआ है और वह अपने धर्म का पालन पूर्ण निष्ठा, समर्पण और मर्यादा के साथ करता है। यथा --

- राम का कर्तव्य : पिता दशरथ के वचन-पालन हेतु वनगमन।
- लक्ष्मण का कर्तव्य : भ्राता-सेवा और राम-समर्पण।
- भरत का कर्तव्य : अयोध्या की गद्दी पर न बैठकर राम के चरण चिन्ह को राजसिंहासन पर प्रतिष्ठित करना।
- सीता का कर्तव्य : पति के साथ वनगमन और कठिनाइयों का सहन।

"पितु वचन मन मानि प्रिय, बन गवन करउँ आज।
धर्म हेतु सब करि सहउँ, यही धरम समाज [6]॥"

धर्म और त्याग - रामायण का जीवन-दर्शन त्याग और मर्यादा पर आधारित है। राम ने राजसिंहासन का त्याग कर वनगमन किया और सुख-सुविधा का त्याग कर धर्म की रक्षा की । भरत ने राज्य का त्याग कर भाई की सेवा व स्मरण को अपनाया।। सीता ने सुख-सुविधाओं का त्याग कर पति के साथ कष्ट झेला।

"राजा रामु त्यागहि सुख, धरमहि प्रीति न चूक।
भरतहि त्यागहि राजपद, सेवा सुमिरन सुख [7]॥"
"राम जानकी सहित भवत, धरम सेतु बनत बिचार।
भरत भ्राता सहित रतन, त्यागहि राजपद सुख दार॥"

रामायण का एक प्रमुख संदेश है कि धर्म की विजय और अधर्म की पराजय निश्चित है। युद्धकाण्ड में रावण-वध इसी का प्रतीक है।

"धर्मो हि सत्यं विजयते नानृतं धर्मसंगतम् [8]।"

रामराज्य और आदर्श शासन तथा रामराज्य की परिकल्पना

रामराज्य का अर्थ है — ऐसा शासन जहाँ सबके अधिकारों की रक्षा हो और सबके कर्तव्य पूरे हों। भारतीय राजनीतिक और सामाजिक चिन्तन में रामराज्य का विशेष स्थान है। यह केवल एक ऐतिहासिक या पौराणिक कल्पना नहीं, बल्कि आदर्श शासन-व्यवस्था का प्रतीक है। महात्मा गाँधी ने भी स्वराज की कल्पना को "रामराज्य" नाम दिया था। तुलसीदास जी ने इसका अद्‌भुत वर्णन किया है :-

"दैहिं सुख सपनेहुँ नहि दुखदायी।
सब नर करहि परस्पर प्रीती, चलहि मार्ग धरमहि सब रीती [9]॥"
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्‌दुःखभाग्भवेत् [10]॥

भक्ति और श्रद्धा :- हनुमान की भक्ति "दास्य-भक्ति" (सेवक भाव) की सर्वोत्तम मिसाल है। उन्होंने श्रीराम को अपना स्वामी और स्वयं को दास माना। सीता की खोज के बाद जब वे राम के पास लौटे, तो सबसे पहले दंडवत प्रणाम किया और कहा:

राम ने समाज में मातृभक्ति पितृभक्ति का सर्वोत्तम उदाहरण स्थापित करते हुए, अपने पिता के वचन के अनुसार वनवास जाने का निश्चय किया। यह पितृभक्ति का उत्कृष्त स्वरूप है।

पितुर्वचननिर्देशात् कैकेय्याः प्रियकारणात् ।
वनं गच्छाम्यहं रामो न मे धर्मोऽन्यथाग्रहः [11]॥
माता गुरुतरा भूमेः पिता स्वर्गस्य गौरवात् ।
क्ष्लाघ्यास्तु तु पिता माता जननी जन्महेतवः [12]॥

भ्रातृ-भक्ति :- भरत ने अपने बड़े भाई राम के प्रति असीम भक्ति और निष्ठा दिखाई।जब वे राम से मिलने चित्रकूट पहुँचे, तो उन्होंने सिंहासन राम को सौंपने की विनती की। उन्होंने यह भी कहा कि यदि राम वापस नहीं लौटे, तो वे भी जीवन का त्याग कर देंगे।

"त्वया विहीनां तु कुतो मम प्रियं जीवितं वा राज्यं वा [13]।"

रामायण में जीवन-दर्शन का वर्णन करते हुए शिक्षाप्रद और दार्शनिक चिंतन का सर्वोत्तम स्वरूप प्रकट किया गया है, जिसमें अहंकार आदि विनाशक तत्वों का निषेध किया गया है। रावण का जीवन हमें अनेक शिक्षाएँ देता है:

"न वेदविद्याविनयाः श्रेयांसि यदि न धर्मतः।
ते सर्वे नष्टसंस्काराः शून्या वटफला इव [14] ॥"

1. विद्या और शक्ति यदि अहंकार से जुड़ जाए, तो विनाशकारी बन जाती है।
2. अधर्म का अंत निश्चित है।
3. स्त्री का अपमान सबसे बड़ा पाप है।
4. सच्ची शक्ति धर्म और मर्यादा में है, न कि आतंक और बल प्रयोग में।

नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य - रामायण हमें यह संदेश देती है कि सत्य और धर्म का मार्ग कठिन हो सकता है, लेकिन अंततः विजय उसी की होती है।भक्ति और समर्पण से असंभव कार्य भी संभव हो जाते हैं।अहंकार और वासना का परिणाम सदैव विनाश है। मर्यादा का पालन ही जीवन को गरिमा प्रदान करता है।

शुभं वा यदि वा पापं यदागतं मम प्रियम् ।
तदाख्याहि हि मे सर्वं सत्यं वक्तुमिहार्हसि [15] ॥

प्रस्तुत शोध पत्र मे रामायण में जीवन-दर्शन के महत्व को स्पष्ट करते हुए धर्म-दर्शन, आदर्श नारी-दर्शन, भक्ति-दर्शन, मित्रता और सहयोग-दर्शन, राजनीतिक दर्शन, अधर्म-दर्शन विषयक शुक्ष्म चिन्तन किया गया है, जो वर्तमान काल में भी प्रासंगिक है।"

निष्कर्ष :

रामायण केवल धार्मिक ग्रन्थ नहीं है, अपितु यह मानव जीवन के आदर्शों एवं नैतिक मूल्यों का अनुपम स्रोत है। इसमें सत्य, धर्म,

कर्तव्य, त्याग, प्रेम, मर्यादा तथा सदाचार का अत्यन्त सुन्दर प्रतिपादन किया गया है। भगवान राम का चरित्र यह शिक्षा देता है कि मनुष्य को विपरीत परिस्थितियों में भी धर्म एवं सत्य के मार्ग का परित्याग नहीं करना चाहिए। माता सीता त्याग, धैर्य एवं नारी-मर्यादा की प्रतीक हैं, जबकि हनुमान भक्ति, निष्ठा एवं सेवा-भाव के आदर्श स्वरूप हैं।

अतः रामायण का जीवन-दर्शन मानव को आदर्श आचरण, नैतिकता, कर्तव्यपरायणता तथा समाज में प्रेम, सद्भाव एवं अनुशासन स्थापित करने की प्रेरणा प्रदान करता है। वर्तमान युग में भी रामायण के सिद्धान्त मानव जीवन के लिए समान रूप से उपयोगी एवं पथ-प्रदर्शक हैं।

संदर्भ-सूची

1. रामायण : (देवनागरी संस्करण) प्रकाशन *1902* ई. निर्णयसागर प्रेस,बम्बई।
2. वाल्मीकि रामायण, अयोध्याकाण्ड 100.15
3. वाल्मीकि रामायण *:* अयोध्याकाण्ड 1.10
4. वाल्मीकि रामायण *:* अयोध्याकाण्ड 18.30
5. रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड 4.9
6. रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड 27.18
7. रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड 2.11
8. रामचरितमानस सुंदरकाण्ड 35.25
9. रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड 21.1
10. रामराज्य वर्णन, उत्तरकाण्ड 128.90
11. वाल्मीकि रामायण, अयोध्याकाण्ड 18.30
12. वाल्मीकि रामायण, अयोध्याकाण्ड 2.24
13. रामचरितमानस , अयोध्याकाण्ड 100.18
14. रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड 7.12
15. वाल्मीकि रामायण, अयोध्याकाण्ड 21.3